सारांश

''हिन्दी पंजाबी एवं बंगला समाज के वैवाहिक गीतों में हास्य एवं व्यंग्य का पुट'' उत्तर भारत के विशेष सन्दर्भ में, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुर शाह जफ़र मार्ग नई दिल्ली – 110 002 को संगीत विषय में प्रस्तुत मेजर प्रोजेक्ट के रुप में मेरे द्वारा तैयार किया गया है।

प्रथम अध्याय में उत्तर भारत का क्षेत्र व सीमा वहाँ पर प्रचलित बोलियाँ तथा राजस्व मण्डल विविध बोलियों के क्षेत्र का विवरण देते हुए भारत में संगीत की स्थिति तथा लोकगीतों की विकास परम्परा का बिन्दुवार दर्शन है।

द्वितीय अध्याय में लोकगीत एवं उनकी सामान्य विशेषताओं का है जिसमें लोकगीतों की परम्परा का उद्भव विकास उनके मूल तत्त्व, समाज में लोकगीतों की स्थिति, भारतीस समाज में विवाह संस्कार का स्वरुप, कन्यापक्ष तथा वरपक्ष में गाये जाने वाले गीत विशेषकर हिन्दू पंजाबी एवं बंगला समाज को लोकाचार सम्बन्धी गीतों का वर्णन है। सगाई, भात, उबटन, हल्दी, रतजगा, वरयात्रा, बारात आगमन एवं प्रस्थान, दुल्हा दुल्हन के सजने सजाने के गीत आदि पर प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय में हास्य, हास्य रस की परिभाषा उत्पत्ति, हास्य एवं व्यंग्य की तुलना के सम्बन्ध में विविध विद्वानों के विचारों को दर्शाते हुए हास्य सम्बन्धी गीतों में छन्द, लय एवं गति, अलंकार प्रयोग संगीत संयोजक राग एवं ताल का स्वरुप आदि की चर्चा है। हास्य गीतों की भावपूर्ण शैली सरल भाषा लोकोक्तियों एवं मुहावरों का प्रयोग तथा गीतों में प्रयुक्त भाषा एवं बोलियों का उल्लेख भी इसी अध्याय में निहित है।

'मंगलगीत' आस्था एवं श्रद्धा के प्रतीक है जिन्हें गाकर अपूर्व शान्ति एवं अलौकिक आनन्द मिलता है किन्तु उन्हें स्थायी रुप प्रदान करना सुरक्षित एवं संरक्षित रखने का कार्य आज बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस दृष्टि से हिन्दुस्तानियों की आस्था बंगला भाषियों की श्रद्धा तथा पंजाबियों के प्रार्थना गीतों का संकलन इस अध्याय की विशेषता है। इस अध्याय में लगभग 80 गीतों का संकलन है।

प्रचलित एवं समाज में लोकप्रिय गीत उत्सव की शोभा हैं। विवाह एक मंगल पर्व है जिसमें हँसी ठिठोली एवं आपसी छींटाकशी के गीत विशेष महत्त्व रखते हैं हास्य गीतों की चुटकल बाजियाँ, आज के व्यस्त एवं भौंढ़े समाज को ठेंगा दिखाती हुई प्रतीत होती हैं। गीतों की सफलता इतनी जबरदस्त है कि साक्षर एवं निरक्षर तथा प्रत्येक अवस्था के प्राणी बच्चे एवं बूढ़े इन गीतों की थापों पर थिरकते नजर आते हैं। इस प्रकार के लगभग 115 गीतों का संकलन पंचम अध्याय की विशेषता है समाज जिन गीतों को गाने सुनने में रुचि रखता है, भारतीय संस्कृति के जो प्राण हैं तथा भारतीय समाज की साँस्कृतिक धरोहर, ऐसे ही माँगलिक एवं हास्यपूर्ण लगभग 130 वैवाहिक गीतों का स्वरांकन (स्वर ताल निर्देश) षष्टम अध्याय में वर्णित है।

मंगल एवं हास्य पूर्ण गीत आज क्यों आवश्यक है? वे किस प्रकार अजर एवं अमर है? उनकी सरलता, स्वाभाविक प्रवृति जिन उद्गारों को व्यक्त करती है वह किस प्रकार इसका प्रत्युत्तर सप्तम अध्याय में शोध विषय के निष्कर्ष रुप में उल्लिखित है। मानवीय जीवन में हास्य की अनिवार्यता को स्वीकारते हुए अनेकों पत्र–पत्रिकाओं ने एतद् सम्बन्धी विचार–मुक्ताओं से रसिक पाठकों को आकर्षित करने का सफल कार्य किया है। युवा, वृद्ध एवं बच्चे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किसी न किसी रुप में नकारात्मक और हीन भावना से जब–जब ग्रसित होते हैं, 'हास्य' की सकारात्मक ऊर्जा उनमें संजीवनी का संचार करती है, मृत कोशिकाओं को सकारात्मक–अमृत से संतृप्त कर देती है। इन्हीं उद्गारों के साथ पत्र–पत्रिकाओं की कुछ कतरनें इस अध्याय के अन्त में लगी है।

प्रोज़ेक्ट कार्य की इतिश्री के समय यह अध्ययन किस सीमा तक सफल हुआ है इसका निर्णय हो तो प्रकाण्ड मनीषी ही करेंगे। चरैवति, चरैवेति सिद्धान्त का प्रतिपादन करते हुए मानव सुलभ त्रुटियों के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। कार्य–पूर्णता के आर्शीवादित क्षणों में परम चैतन्यमयी लहरियों से आनन्दित हो उठी हूँ।

(डॉ0 अनीता जौहरी)